पशुधन द्वारा
जीवन में गुणात्मक सुधार

बिहार सरकार
पशु एवं मत्स्य संसाधन विभाग

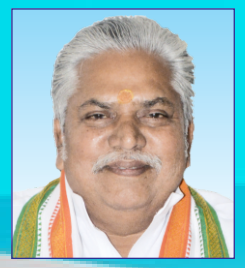

डॉ. प्रेम कुमार
माननीय मंत्री, पशु एवं मत्स्य संसाधन विभाग, बिहार

बरसात के मौसम में पशुओं की देखभाल हेतु सुझाव

भारत में वर्षा ऋतु का समय 15 जून से 15 सितम्बर तक का होता है। इस दौरान वातावरण में अधिक आद्रता होने की वजह से वातावरण के तापमान में अधिक उतार–चढ़ाव देखने को मिलता है जिसका कूप्रभाव प्रत्येक श्रेणी के पशुओं पर भी पड़ता है। वातावरण में आद्रता की अधिकता होने के कारण पशु की पाचन प्रक्रिया के साथ साथ उसकी आन्तरिक रोग रोधक शक्ति पर भी असर पड़ता है। इसी मौसम के दौरान परजीवियों की संख्या में अत्यधिक वृद्धि देखने को मिलती है जिनके द्वारा पशुओं को प्रोटोजोअन एवं पारासिटिक रोग हो जाते हैं। इन रोगों के प्रकोप से पशु का स्वास्थ्य बिगड़ जाता है जिससे पशुपालकों को भारी आर्थिक नुकसान उठाना पड़ता है। इसलिए वर्षा ऋतु के दौरान अपनाने योग्य कुछ महत्वपूर्ण बातों का उल्लेख किया गया है जिसका पालन करने से पशुपालक अपने पशु संसाधन के स्वास्थ्य को बनाए रख सकते हैं।

- बारिस के पहले पशुओं के पशुशाला की छत की मरम्मत कर दें जिससे बारिस का पानी न टपके।
- पशुशाला की खिड़कियाँ खुली रखें तथा गर्मी एवं उमस से बचने के लिये पंखों का उपयोग करें।
- इस मौसम में साफ–सफाई का खास ख्याल रखें एवं पानी को एक जगह पर एकत्रित नहीं होने दें जिससे मच्छड़ न हों और परजीवी संक्रमण को रोका जा सके।
- पशुशाला में पशु के मल–मूत्र की निकासी का भी उचित प्रबंधन हो। पशुशाला को दिन में एक बार फिनाईल के घोल से अवश्य साफ करें, जिससे बीमारी फैलाने वाले बैक्टिरिया कम हो सके।
- बाड़े में और उसके आस–पास कचड़ा और गंदगी इकठ्ठा न होने दें और उसके निकास की उचित व्यवस्था हो। नियमित अन्तराल पर कीटनाशक का भी छिड़काव करें।
- जानवरों को ज्यादा शारीरिक थकावट न होने दें और बार–बार धूप में न लाएँ।
- बारिस के मौसम में पशुओं को बाहर चरने के लिये नहीं भेजें क्योंकि बारिस के मौसम में गीली घास पर कई तरह के कीड़े होते हैं जो पशुओं के पेट में चले जाते हैं और शरीर को नुकसान पहुंचाते हैं।
- पशु को खेतों के समीप गढ्ढे या तालाब का पानी पिलाने से परहेज करें क्योंकि इस दौरान किसान खेतों में खर–पतवार एवं कीटनाशक दवा का इस्तेमाल करते हैं जो कि रिसकर इनमे आ जाता है। कोशिश करें कि पशु को बाल्टी से साफ एवं ताजा पानी पिलाएँ। दाने का भण्डारण नमी रहित जगह पर करें और ध्यान दें कि इस मौसम में दाने को 15 दिन से अधिक भण्डारण न करें।
- बरसात आने से पहले पशु एवं मत्स्य संसाधन विभाग की ओर से गलाघोंटू, लंगड़ी बुखार तथा खुरहा एवं मुँहपका रोग का निःशुल्क टीकाकरण अभियान घर–घर जाकर चलाया जाता है।